भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शाहपुरा के बारहठ परिवार का योगदान
(एक ऐतिहासिक अध्ययन)

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

इतिहास में पीएच.डी की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशक
JVR डॉ. अमित चमोली

शोधार्थी
JVR देवपाल सिंह चारण
ENROLLMENT NU: - JVR-I/23/12061
SCHOLAR NUMBER: - JVR2362

"मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग"
(कला संकाय)

इतिहास

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर(राजस्थान)
2023

" अनुक्रमणिका "

प्रस्तावना	3–8
साहित्य समीक्षा	8–11
शोध का उद्देश्य	11
शोध परिकल्पना	12
शोध पद्धति	12–13
अध्याय योजना	14–15
उपसंहार	15
संदर्भ ग्रंथ सूची	16–18

प्रस्तावना

भारत पर प्राचीन काल से ही विदेशी आक्रमण होते आए हैं। सर्वप्रथम ईरानी आक्रमण हुए उसके बाद यूनानी, इंडो–ग्रीक, पहलव वंश, शक, कुषाण, हूण, पूर्व मध्यकाल या राजपूत काल में अरब आक्रमण हुए फिर तुर्क आक्रमण और 1526 में मुगल आक्रमण। इसी मुगल वंश के समय भारत में विदेशी व्यापारियों के रूप में अलग–अलग कंपनियों ने भारत में अपने उपनिवेश स्थापित किए। भारत में ब्रिटिश कंपनी ने अपने व्यापार के उद्देश्य को छोडकर राज्यों के अधिग्रहण नीति अपनाई। इसके फलस्वरुप ब्रिटिश के खिलाफ विद्रोह का सूत्रपात हुआ। 1757 में प्लासी के युद्ध के बाद स्थापित ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध प्रथम बार 1857 में विद्रोह की क्रांति हुई इस क्रांति ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी। भारत में राष्ट्रवाद संबंधित गतिविधियों को लेकर अनेक समितियां, राजनीतिक संस्थाओं का गठन हुआ और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एक सही दिशा में चलने लगा।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन तीन चरणों में था प्रथम चरण 1885 से 1905 द्वितीय चरण 1905 से 1919 और तृतीय चरण 1919 से 1947। 1885 में कांग्रेस की स्थापना के साथ ही भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण प्रारंभ होता है इस काल में कांग्रेस की जो विचारधारा व कार्य थे उनको उदारवादी कहा गया दादाभाई नौरोजी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी ये इसी उदारवादी विचारधारा वाले थे इनको संवैधानिक तरीके और ब्रिटिश सरकार की न्याय व्यवस्था में पूर्ण विश्वास था। 1905 में भारतीय राष्ट्रवाद का दूसरा चरण प्रारंभ होता है जिसको उग्रवादी काल कहा जाता है इस उग्रवाद और नव राष्ट्रवाद के जनक बाल गंगाधर तिलक थे कांग्रेस की उदारवादी नीति और प्रार्थना और याचना नीति के विपरीत विद्रोह हिंसा की नीति पर आधारित थे। उग्रवादियों में लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्र पाल प्रमुख थे इस क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रमुख केंद्र बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र थे जिसमें 1897 में चापेकर बंधुओ ने पूना फ्लैग कमिश्नर रेंट, नासिक के जिला मजिस्ट्रेट जंक्शन की हत्या 1909 में अनंत लक्ष्मण कन्हारे ने कर दी, 1925 में काकोरी कांड को राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खान, राजेंद्र लाहिडी ने अंजाम दिया 1928 में हिंदुस्तान सोशियल रिपब्लिक एसोसियेशन का गठन चंद्रशेखर आजाद ने किया इसी दल ने केंद्रीय असेंबली में 1929 में बम फेंका।

तीसरा चरण महात्मा गांधी के भारत आगमन के बाद प्रारंभ होता है। इस काल के अंतर्गत भारतीयों को शासन में शामिल करने के लिए और उनकी मांगों और सहयोग के लिए अनेक अधिनियम और आयोग पारित किए। 1917 में चंपारण 1918 में अहमदाबाद मिल मजदूर आंदोलन 1918 में खेडा सत्याग्रह के साथ गांधी जी ने राष्ट्रीय आंदोलन के लिए कार्य प्रारंभ किया 1919 में रॉलेट एक्ट पारित हुआ इसके विरोध में जलियांवाला बाग में आयोजित सभा में वीभत्स हत्याकांड हुआ इसके बाद ब्रिटिश सरकार के खिलाफ राष्ट्रीय आंदोलन चिंगारी भडक उठी और 1920 में असहयोग आंदोलन, 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन, 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा 1942 में भारत छोडो आंदोलन, आरंभ करके राष्ट्रीय आंदोलन को दिशा दी। 1942 में द्वितीय विश्वयुद्ध में सहयोग के लिए ब्रिटिश सरकार ने क्रिप्स मिशन भारत भेजा। 1946 से पूर्व संवैधानिक विकास के लिए समय–समय पर अनेक अधिनियम पारित किए गए 1946 में कैबिनेट मिशन के भारत आगमन के बाद भारत में अंतरिम सरकार का गठन हुआ। 20 फरवरी 1947 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा की जिसमे कहा कि 30 जून 1948 तक भारत को आजाद कर दिया जाएगा। 3 जून 1947 माउंटबेटन योजना के तहत भारत के विभाजन के साथ सत्ता हस्तांतरण कर 14 अगस्त 1947 को पाकिस्तान और 15 अगस्त 1947 भारत को ब्रिटिश सरकार से आजाद किया।

राजस्थान के राजाओं ने उत्तराधिकारी युद्ध और आपसी युद्धों के फलस्वरुप मराठों और पिंडारियो से सहायता लेना प्रारंभ किया जिसके कारण उनकी की लूटमार शुरू हुई जिसके चलते अनेक रियासतों ने अंग्रेजो के साथ संधियां करली और इसी का फायदा उठाते हुए अंग्रेजो ने उनके आंतरिक मामलों मैं हस्तक्षेप प्रारंभ कर दिया और धीरे–धीरे राज्यों को अधिग्रहण करना जिसके चलते राजस्थान में भी 1857 की क्रांति हुई जो की अलग–अलग रियासतों में प्रारंभ हुई इस क्रांति में अनेक राजाओं ने अंग्रेजों का साथ दिया और क्रांति का दमन में उन्होंने अंग्रेजों के लिए पूर्ण रूप से सहयोग किया इसके विपरीत कुछ राजाओं ने अपने रियासत में विद्रोहियों को शरण दी और उनका सहयोग किया। अंग्रेजों ने रियासतों पर अनेक प्रकार के कर लगाए और बढते हुए कर्ज के कारण रियासत के राजाओं ने जमींदारों और किसानों पर कर थोप दिए। जमीदारों द्वारा की गई क्रूरतापूर्वक वसूली के कारण राजस्थान में किसान आंदोलन की शुरुआत हुई इन आंदोलनो को रियासतों और अंग्रेजो ने

मिलकर बहुत क्रूरता से दबाया इस किसान आंदोलन के स्थानीय नेताओं ने राष्ट्रीय स्तर नेताओं और कांग्रेस के सम्मेलन में अपनी समस्याओ से अवगत किया।

राजस्थान में अनेक प्रकार की कुप्रथाएं विद्यमान थी अंग्रेजों ने इन प्रथाओं को बंद करने हैं और उनमें सुधार के लिए अनेक प्रकार के नियम और कानून लागू किए जिसके कारण अलग–अलग क्षेत्र में जनजातीय आंदोलन हुए और अंग्रेजों ने इन आंदोलनों को बडी निर्मम्रता पूर्ण रूप से खत्म किया। राजस्थान में हो रहे इस बदलाव के कारण अनेक प्रकार के राजनीतिक और क्रांतिकारी संगठन की स्थापना प्रारंभ हुई राजनीतिक सेवाओं में 1910 केसरी सिंह बारहठ द्वारा वीर भारत सभा, राजस्थान सेवा संघ 1919 विजय सिंह पथिक द्वारा, मारवाड सेवा संघ 1920, अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद मुंबई 1927, आजाद मोर्चा जयपुर 1942, की स्थापना करके अंग्रेजों के खिलाफ राजस्थान में स्वतंत्रता आंदोलन प्रारंभ किया इस काल के विभिन्न समाचार पत्रों का भी इस स्वाधीनता आंदोलन मैं योगदान रहा जिन्होंने राजस्थान में हो रहे हैं स्वाधीनता आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर और आमजन तक पहुंचाया इन समाचार पत्रों में सज्जन कीर्ति सुधाकर, राजपूताना गजट, राजपूताना हेराल्ड, राजपूताना टाइम्स, राजस्थान समाचार, राजस्थान केसरी, नवीन राजस्थान, तरुण राजस्थान, प्रताप नवजीवन, आगिवानी आदि प्रमुख थे।

राजस्थान में शासन में स्थानीय भागीदारी के लिए राजस्थान के रियासतों में प्रजामंडल की स्थापना प्रारंभ हुई। इन प्रजामंडलों का प्रमुख उद्देश्य उतरदायी शासन की स्थापना करना था प्रजामंडलों के माध्यम से राजस्थान में स्वाधीनता आंदोलन को एक दिशा नई दिशा मिली और इन प्रजामंडल का प्रमुख उद्देश्य रियासत के शासन को समाप्त करके स्थान या उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना और अंग्रेजों के प्रभाव से मुक्त होना था। इन रियासतों में तत्कालीन मेवाड रियासत के राजा सज्जन सिंह के दरबारी कवि और प्रधानमंत्री रह चुके वीर विनोद के लेखक कविराजा श्यामलदास के भांजे शाहपुरा जागीर के देवपुरा गाँव के कृष्ण सिंह बारहठ थे। श्यामलदास महाराणा के करीबी थे और विश्वास पात्र भी थे जल्दी ही कृष्ण सिंह भी अपने लेखन विचारो और विद्वंता के कारण महाराणा के विश्वास पात्र बन गये इसके बाद महाराणा ने उनको जोधपुर रियासत भी भेजा। साधारण और नेक विचारो वाले कृष्ण सिंह महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारो से प्रभावित थे। कृष्ण सिंह बारहठ के तीन पुत्र थे केसरी सिंह बारहठ, किशोर सिंह बारहठ और जोरावर सिंह बारहठ।

केसरी सिंह बारहठ का जन्म नवम्बर 1872 को तत्कालीन शाहपुरा जागीर देवपुरा गाँव में हुआ। बचपन से ही क्रांतिकारी और स्वतंत्रता विचारो से ओत प्रोत केसरी सिंह बारहठ का बचपन कठिनाइयों से भरा था। जन्म के कुछ दिनों बाद ही माता बख्तावर कँवर का निधन हो गया और दादी माँ श्रृंगार कँवर ने लालन पालन किया। केसरी सिंह बारहठ की प्रारम्भिक शिक्षा काशी के पंडित गोपीनाथ द्वारा संस्कृत पठन से हुई उनको संस्कृत के साथ साथ हिंदी, बंगाली, प्राकृत, मराठी, डिंगल अन्य भाषाओ का भी ज्ञान था। स्वामी दयानंद सरस्वती से मुलाकात वैदिक धर्म विचार से प्रभावित हुए। अपने पिता और श्यामलदास की तरह मेवाड़ की राजकीय सेवा में अपनी सेवाए देनी प्रारंभ की। 1891 में कोटा की माणिक कँवर से विवाह किया और 1893 में माणिक कँवर ने वीर प्रताप सिंह बारहठ को जन्म दिया। केसरी सिंह बारहठ क्रांतिकारी विचारो वाले थे। वे इटली के एकीकरण के प्रणेता मेजिनी को अपना राजनीतिक गुरु मानते उन्होंने धीरे धीरे क्रांतिकारी योजनाओ कार्यो को अंजाम देना प्राम्भ कर दिया इसके लिए भारत के विभिन्न क्रांतिकारियों से संपर्क किया। भारत के प्रमुख क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा को केसरी सिंह ने मेवाड़ प्रधानमंत्री कार्य के लिए महाराणा को सुझाव दिया यहाँ पर अंग्रेजो के खिलाफ बगावत के विचार प्रसारित हुए और कुछ ही समय में श्याम जी कृष्ण वर्मा को भारत छोड़ना पड़ा और मेवाड़ पालिटिकल एजेंट के कहने पर कृष्ण सिंह को मेवाड़ से निष्काषित कर दिया उसी समय केसरी सिंह महाराजा उम्मेद सिंह की सेवा में कोटा आ गये। यहाँ से वो क्रांतिकारियों के संपर्क में आये शचिन्द्र नाथ सान्याल, रास बिहारी बोस, अर्जुन लाल सेठी, विजय सिंह पथिक, गोपाल सिंह खरवा प्रमुख थे। केसरी सिंह बारहठ ने 1903 में मेवाड़ महाराणा फतेह सिंह को दिल्ली दरबार में जाने से रोकने हेतु चेतावनी रा चुंगठिया, लिखे 1910 में वीर भारत सभा की स्थापना की जो की सशत्र क्रांति के प्रारंभ के लिए थी रास बिहारी बोस ने राजस्थान में सशस्त्र क्रांति के लिए केसरी सिंह बारहठ राव गोपाल सिंह खरवा को चुना। राष्ट्र सेवा के लिए समितियों और क्रांति के लिए धन जुटाना प्रथम कार्य था इसके लिए जोधपुर के महंत प्यारेलाल को 1912 में अगवा कर उसकी हत्या की। अंग्रेजो के खिलाफ राजनीतिक गतिविधियों के कारण दिल्ली षड़यंत्र केश की जांच करते समय पहली बार केसरी सिंह बारहठ को गिरफ्तार किया गया जांच मे अन्य निमाज हत्याकांड में भी भागीदारी पाई गयी और सारी सम्पति जब्त की गयी और बीस वर्षो का कारावास सजा दी यहाँ पर क्रांतिकारियों की गतिविधियों को देखते हुए उनको हजारीबाग

जेल भेज दिया गया वहाँ हजारीबाग में अन्न का त्याग कर दिया फलस्वरूप पांच वर्ष जेल के बाद 1920 में जेल से रिहा हुए। यहाँ से वर्धा चले गये वहां पर राजस्थान केसरी नामक साप्ताहिक समाचार पत्र शुरू किया, वर्धा में ही केसरी सिंह की मुलाकात महात्मा गाँधी से हुई थी। 1920 में बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु के बाद केसरी सिंह कोटा आ गये पत्नी की मृत्यु के बाद एकांत ही रहने लगे जीवन भर क्रांतिकारी और देश के लिए बलिदान देने वाले केसरी सिंह बारहठ ने 1941 में अंतिम सांस ली।

कृष्ण सिंह बारहठ, के अन्य पुत्र जोरावर सिंह बारहठ का जन्म 1883 में उदयपुर में हुआ और यही पर प्रारम्भिक शिक्षा और बचपन बीता। विरासत में मिली स्वतंत्रता के लिए बलिदान की भावना से ओतप्रोत जोरावर सिंह भी अपने अग्रज केसरी सिंह की तरह क्रांतिकारी विचारो वाले थे। क्रांतिकारी घटनाओ में जोरावर सिंह का नाम दो रूप में प्रमुख हे उनके द्वारा बिहार के आरा या निमेज हत्याकांड सबसे प्रमुख है इस 1912 के निमेज हत्याकांड अर्जुन लाल सेठी के द्वारा योजनाबद्ध था। उनकी इस योजना को कार्यरूप देने के लिए जोरावर सिंह बारहठ को ये कार्य सौपा इस हत्याकांड में पांच व्यक्ति नामजद अभ्युक्त बनाये। 1912 में दिल्ली ने आयोजित होने जा रहे अंग्रेजी दरबार जिसमे इंग्लैंड के सम्राट जार्ज पंचम भी आ रहे थे। इस दरबार में रास बिहारी बोस द्वारा बम फेंकने की योजना बनायीं गयी इस योजना को क्रियान्वित करने के लिए जोरावर सिंह बारहठ, प्रताप सिंह, मास्टर अमीरचंद, बसंत विश्वास, छोटे लाल, हनुमंत सहाय को ये काम सौंपा। 23 दिसम्बर 1912 को तत्कालीन भारत के वायसराय लार्ड होर्डिंग पर दिल्ली के चांदनी चोक में बुर्खा पहन कर जोरावर सिंह ने बम फेंका जो की थोडा सा चुक जाने के कारण होर्डिंग के महावत पर गिरा जो वही मारा गया और होर्डिंग विस्फोट के कारण बेहोश हो गया जल्दी ही जोरावर सिंह वहां से फरार हो गये और डूंगरपुर, बांसवाडा में गुप्त रूप से अमरदास वैरागी नाम से रहने लगे और अंत में मध्यप्रदेश के सीतामऊ में रहने लगे। जोरावर सिंह भी आजाद की तरह कभी भी अंग्रेजो के हाथ नही आये और अंत समय में निमोनिया के कारण 1939 में देहांत हो गया।

वीर पिता और वीर चाचा जिस बारहठ परिवार से सम्बन्ध रखते थे उसी परिवार में एक अन्य वीर कुंवर प्रताप सिंह बारहठ का जन्म उदयपुर में 1893 में हुआ। वीरता और ज्वलंत खून विरासत में मिले हो जिसे वो कैसे इन क्रांतिकारियों कार्यो से अछुता रह सकता

था। बचपन में ही केसरी सिंह ने अपने पुत्र प्रताप सिंह का शिक्षा का कार्य दयानंद एंग्लो वैदिक हाई स्कूल मेट्रिक तक की व्यवस्था की उसके वाद क्रांतिकारी शिक्षा के लिए अर्जुन लाल सेठी के पास भेज दिया यहाँ पर मास्टर अमीचंद ने उनको क्रांति की व्यावहारिक शिक्षा दी कुछ समय बाद रासबिहारी बॉस ने अपने पास रखा और राजस्थान में क्रांतिकारी दल के गठन का काम दिया होर्डिंग बम काण्ड में अपने चाचा के साथ प्रताप सिंह भी बम फेंकते समय वही थे दिल्ली षड़यंत्र केस में गिरफ्तार किया परन्तु ठोस सबूत अभाव में रिहा कर दिया वहां से बंगाल और फिर पंजाब के क्रांतिकारियों से संपर्क किया उतरी भारत और राजपुताना में सशस्त्र क्रांति के लिए गुप्त रूप से संगठन बनाया इसी काम में जोधपुर आये थे वहा उनके करीबी मित्र ने विश्वासघात करके आशानाडा रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार करवा दिया जहां बरेली जेल में अमानवीय अत्याचार किये और अपने युग के प्रसिद्ध अंग्रेजी अधिकारियो के सामने नही झुके और अंग्रेज अधिकारी क्लीवलैंड ने बहकाते हुए कहा की प्रताप तुम्हारी माँ बहुत रोती हे तुम अपने साथियों के नाम हमे बता दो तुमे छोड़ देंगे तो वीर प्रताप ने इसका उत्तर देते हुए कहा की में एक माँ को चुप करवाने के लिए हजारो माँ को रुला नहीं सकता। वीरता के परिचायक प्रताप सिंह के उपर जेल में अमानवीय अत्याचार किये गये जिसके कारण मात्र 25 वर्ष की उम्र में शहीद हो गये।

साहित्य समीक्षा

<u>डॉ नृसिंह राजपुरोहित की कृति(भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थानी कवियों रों योगदान)</u> कुल चार अध्याय में विभक्त है। इसके प्रथम अध्याय में 1857 की क्रांति से पहले की रचित काव्य है। इसके दुसरे अध्याय में 1857 की क्रांति के बाद कवि सूर्यमल मिसण, हाड़ोती क्षेत्र का संग्राम स्वतंत्रता सेनानी, शंकर दान सामोर आदि के लेखन वर्णन है। इसके तीसरे और सबसे महवपूर्ण अध्याय में महाराणा फतेह सिंह को दिल्ली दरबार में जाने से रोकने सम्बंधित केसरी सिंह के सोरठे, महान देशभक्त बारहठ परिवार, राव गोपाल सिंह खरवा के बारे में विस्तृत लेखन है। इसके अंतिम अध्याय में प्रजामंडल युग की काव्यधारा का उलेख मिलता है।

फतेह सिंह मानव की कृति (भारतीय साहित्य के निर्माता –केसरी सिंह बारहठ) कुल 4 अध्याय है जिसमे प्रथम अध्याय में बारहठ परिवार के वंश परम्परा कृष्ण सिंह उनके पुत्रो, केसरी सिंह, जोरावर सिंह, प्रताप सिंह, हजारीबाग सेन्ट्रल जेल, चेतावनी रा चुंगठिया, वर्धा प्रवास, आदि की जानकारी प्राप्त होती है। दूसरे अध्याय जो की कृतित्व गद्यखंड है इसमें हजारीबाग जेल से लिखे पत्र, ए.जी.जी. को लिखे पत्र, कन्या शिक्षा के बारे में विचार है। तीसरे खण्ड पद्य खंड राजस्थानी में है, अगले अध्याय में पद्य हिंदी खंड है जिसमे ईश भक्ति, महाभारत का नीति पाठ, श्रद्धान्जली काव्य माणिक कँवर।

डॉ देवीलाल पालीवाल डॉ बृजमोहन जावलिया की कृति क्रांतिकारी बारहठ केसरी सिंह व्यक्तितव एवं कृतित्व(खण्ड प्रथम) कुल चार अध्याय में प्रथम अध्याय में हिंदी काव्य है जिसमे विभिन्न साथियों, परिवार सदस्यों, राष्ट्र धर्म, भारत दुर्दशा, राज धर्म, आदि से सम्बंधित पत्र के बारे में वर्णन है। दूसरे अध्याय में राजस्थानी काव्य के बारे में उनके द्वारा लिखे गये दोहे। तीसरे अध्याय में पत्र व्यवहार के बारे में जानकारी हे जिसमे अपने पुत्री चंद्रमणि के नाम पत्र और जमाता ईश्वर दान आशिया के नाम पत्र, सरदार पटेल, जोधपुर के नाम पत्र आदि के बारे में विस्तृत वर्णन है।

डॉ रामप्रसाद व्यास की कृति(आधुनिक राजस्थान का वृहत इतिहास) दो खंडो में विभाजित है। द्वितीय खण्ड में ब्रिटिश आधिपत्य में राजस्थान के 1857 का विप्लव, राजस्थान के किसान आंदोलन, स्वतंत्रता संघर्ष, ब्रिटिश संरक्षण कालीन राजस्थान का सामाजिक आर्थिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

डॉ मोहनलाल गुप्ता की कृति(क्रांतिकारी बारहठ केसरी सिंह) में केसरी सिंह बारहठ के बारे में विस्तृत वर्णन किया गया है। इसमें केसरी सिंह की समाज सुधार की राह, सशस्त्र क्रांति, ब्रिटिश सरकार एवं राजाओ को चेतावनी, केसरी सिंह की आत्मकथा, केसरी सिंह का पत्नी प्रेम आदि के बारे में विस्तारपूर्वक लिखा है।

कालू राम शर्मा, प्रकाश व्यास की कृति(राजस्थान के इतिहास का सर्वेक्षण–प्रारंभ से 1949) में राजस्थान में राजनीतिक जागृति के कारण, राजस्थान

किसान व जनजाति आंदोलन और राजस्थान के नाम से तीन अध्याय क्रमशः 496–506, 507–533, 534–564 पृष्ठ संख्या पर दिए गए है जिसमे बारहठ परिवार के केवल दो सदस्यों केसरी सिंह बारहठ एवं प्रताप सिंह बारहठ का सामान्य परिचय एव कुछ क्रांतिकारी घटनाओं जैसे–साधुप्यारेलाल हत्याकांड, रामकरण गुप्त हत्याकांड, मेरठ जेल प्रकरण आदि का बहुत ही संक्षिप्त वर्णन है, पुस्तक में सम्पूर्ण इतिहास समाहित करने के उद्देश्य से संभवतः ऐसा किया गया है की विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं हो पाता।

डॉ.हुकुमचंद जैन, डॉ.नारायण माली की कृति(राजस्थान के इतिहास कला, संस्कृति, साहित्य,परंपरा एवं विकास) पुस्तक में पृष्ट संख्या 158 से 162 तक केसरी सिंह की क्रांतिकारी गतिविधियों का उल्लेख है जिसमें जोरावर सिंह और कुंवर प्रताप सिंह बारहठ द्वारा होर्डिंग बम केस में प्रमुखता से भाग लेने का उल्लेख है।

सुमनेश जोशी की कृति(राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी) प्रस्तुत पुस्तक में राजस्थान के सभी स्वतंत्रता सेनानियों का उल्लेख और उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों, आंदोलनों की जानकारी हे जिसमे बारहठ परिवार की भी सामान्य जानकारी उपलब्ध है। पुस्तक में वर्णित क्रांतिकारी व उनकी गतिविधियाँ शोध कार्य में लिखित तर्कों का अनुमोदन करती है।

प्रकाश माली की कृति(राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम–एक विहंगावलोकन) प्रस्तुत पुस्तक में राजस्थान में घटित क्रांतिकारी घटनाओ का विस्तृत विवरण उपलब्ध है। लेकिन समस्त घटनाओं पर लिखित होने के कारण, शोध विषय की सामान्य जानकारी ही उपलब्ध हो पाती है।

डॉ. मनोहर प्रभाकर की कृति(राजस्थान में समाचार पत्रों का इतिहास) प्रस्तुत पुस्तक में राजस्थान में समाचार पत्रों का उल्लेख है जिसमे शोध के विषय के अंतर्गत वर्धा से प्रकाशित "राजस्थान केसरी" अति महत्वपूर्ण है जो केसरी सिंह बारहठ के नाम ही दिया गयाद्य ये देशी राज्यों का मुख्य पत्र था। साथ ही गणेश शंकर विद्यार्थी का "प्रताप" भी महत्वपूर्ण था।

<u>बी. एल. पनगडिया की कृति(स्वाधीनता संग्राम का अंतिम चरण)</u> प्रस्तुत पुस्तक में स्वाधीनता संग्राम के अंतिम चरण पर विशेष कार्य है जिसमे 1857 की क्रांति के बाद की घटनाओं, जन आंदोलन, राजनीतिक चेतना के बिन्दुओ पर चर्चा की गई है, जिसमें राजस्थान के संदर्भ में ठाकुर केसरी सिंह बारहठ का नाम उल्लेखनीय है। लेकिन इस पुस्तक में समग्र रूप से इस पर कार्य किया गया है।

उपर्युक्त सभी कृतियों की ग्रंथ समीक्षा करने के बाद देखते है कि विभिन्न पुस्तकों की विषयवस्तु भिन्न रही है। शोध की सभी सामग्रियों और संसाधनों का मूल्यांकन करना आवश्यक है। बारहठ परिवार से संबंधियों सदस्यों द्वारा स्थापित कीर्तिमान की प्रासंगिकता है। उपर्युक्त सारांश के आधार पर बारहठ परिवार का क्रमिक रूप से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान के अध्ययन की आवश्यकता है। इस बारहठ परिवार के कार्यो का स्वतंत्रता आंदोलन में क्या प्रभाव रहा है का विस्तृत अध्ययन करना आवश्यक है।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध प्रारूप में शोध विषय "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शाहपुरा के बारहठ परिवार का योगदान– एक ऐतिहासिक अध्ययन" के चयन के मुख्य उद्देश्य निम्न है–

1. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीयों द्वारा किए गये प्रयासो का अध्ययन करना
2. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में राजस्थान के योगदान का अध्ययन करना
3. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में मेवाड़ रियासत के योगदान का अध्ययन करना
4. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में केसरी सिंह बारहठ के कार्यो का अध्ययन करना
5. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जोरावर सिंह बारहठ के योगदान का अध्ययन करना
6. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में प्रताप सिंह बारहठ के योगदान का अध्ययन करना
7. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बारहठ परिवार के सहयोगियों का विस्तृत अध्ययन करना

शोध परिकल्पना

मेरे शोध का विषय "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शाहपुरा के बारहठ परिवार का योगदान– एक ऐतिहासिक अध्ययन" है। मेरे शोध की परिकल्पना इस प्रकार है की बारहठ परिवार के कार्यो और उनके योगदान को इतिहास में कम स्थान मिला है। इतिहास में उनको उचित स्थान मिले इसके लिए मेरे शोध की परिकल्पना निम्न बिंदुओ पर आधारित है–

1. बारहठ परिवार का स्वतंत्रता आंदोलन में अतुल्य योगदान था।
2. बारहठ परिवार राजस्थान व भारत में क्रांतिकारी आन्दोलन के कर्णधार थे।
3. बारहठ परिवार के योगदान को इतिहासकारों ने अपनी कलम से कम आँका है।
4. बारहठ परिवार का राजपूताने के राजाओं का समर्थन प्राप्त था।
5. बारहठ परिवार की क्रांतिकारी गतिविधियां अहिंसा की बजाय हिंसा पर आधारित था।
6. बारहठ परिवार कभी भी देशी रियासतों के राजाओं व ब्रिटिश हुकुमत के सामने नहीं झुका।
7. बारहठ परिवार का योगदान स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेरणा स्रोत के रूप में काम आया।

शोध पद्धति

प्राथमिक स्रोतः– प्राथमिक स्रोतों के लिए केसरी सिंह बारहठ द्वारा लिखे गए पत्र, बारहठ परिवार के स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग करने वालो के साथ पत्र व्यवहार, अपने पुत्री चंद्रमणि के नाम पत्र और जमाता ईश्वर दान आशिया के नाम पत्र, सरदार पटेल, जोधपुर के नाम पत्र, आदि का राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली, माणिक भवन कोटा, शाहपुरा हवेलिया भीलवाड़ा, जिला अभिलेखागार जोधपुर, केंद्रीय पुस्तकालय जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर, केंद्रीय पुस्तकालय राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, केन्द्रीय पुस्तकालय कोटा विश्वविद्यालय, केंद्रीय पुस्तकालय महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर, केन्द्रीय पुस्तकालय मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय में उपलब्ध सामग्री का अध्ययन करने का प्रयास किया जायेगा।

द्वितीयक स्रोतः— प्रस्तुत शोध कार्य के लिए द्वितीयक स्रोतों से आंकडो और तथ्यों को एकत्र किया जायेगा शोध विषय से संबंधित संकलन प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध ग्रंथ सरकारी राजपत्र, पत्र पत्रिकायें परिवर्तित कालीन इतिहास तथा तत्कालीन साहित्य, सामन्तो के रिकॉर्ड, सरकारी व गैर सरकारी रिकॉर्ड वंशावली, आदि आंकडों का संकलन, चयन और विश्लेषण किया जाएगा उसके पश्चात सत्य पर आधारित निष्कर्ष निकाले जाएंगे शोध कार्य की प्रकृति विश्लेषणात्मक विवरणात्मक और ऐतिहासिक संदर्भ में होगी।

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए सामग्री का संकलन राजकीय संग्रहालय उदयपुर, सिटी पैलेस म्यूजियम उदयपुर, महाराणा प्रताप संग्रहालय उदयपुर, राजकीय संग्रहालय अजमेर, राजकीय संग्रहालय कोटा, राजकीय संग्रहालय झालावाड, राजकीय संग्रहालय मंडोर, सरदार राजकीय संग्रहालय जोधपुर, राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी जोधपुर, प्रताप शोध प्रतिष्ठान एवं भूपाल नोबल्स संग्रहालय उदयपुर, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश जोधपुर, केंद्रीय पुस्तकालय जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर, केंद्रीय पुस्तकालय राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, केन्द्रीय पुस्तकालय महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर, केंद्रीय पुस्तकालय मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर में उपलब्ध सामग्री का अध्ययन किया जाएगा।

अध्याय योजना

प्रस्तुत शोध को 7 अध्यायों में विभक्त किया गया है जो कि इस प्रकार है—

प्रथम अध्यायः—भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास— प्रस्तुत अध्याय में सर्वप्रथम ब्रिटिश सरकार के भारत में उपनिवेश स्थापित करने से लेकर उनके द्वारा राज्यों का अधिग्रहण और उन पर किए गए अत्याचारों के खिलाफ जो आंदोलन हुआ उसका अध्ययन करूंगा और इस अध्याय में विभिन्न नेताओं द्वारा किए गए आंदोलनो और अंग्रेजों के समय समय पर सुधार आयोग और नीतियों का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करूंगा।

द्वितीय अध्यायः—केसरी सिंह बारहठ का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदानः— प्रस्तुत अध्याय में केसरी सिंह बारहठ के जन्म, उनके बाल्यकाल और उनकी प्रारंभिक शिक्षा, उनका मेवाड रियासत से संबंधित कार्य, उनके विवाह उनके पुत्र—पुत्री, उनके द्वारा लिखे गए पत्र पत्रिकाएं पुस्तकों आदि का अध्ययन करूंगा। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान का अध्ययन करूंगा केसरी सिंह बारहठ के इस स्वतंत्रता आंदोलन में भारत के व राजस्थान के प्रमुख सहयोगियों का और उनके क्रांतिकारी विचारों व कार्यों का अध्ययन करूंगा।

तृतीय अध्यायः—जोरावर सिंह बारहठ का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदानः— इस अध्याय में केसरी सिंह बारहठ के भाई जोरावर सिंह बारहठ का जन्म स्थान तथा उसके प्रारंभिक शिक्षा उनके द्वारा किए गए क्रांतिकारी कार्यों लॉर्ड हार्डिंग बम कांड, आरा हत्याकांड, सशस्त्र क्रांति में भूमिका और अमर दास बैरागी नाम से भेष बदल के बिताए गए अंतिम जीवन का अध्ययन करूंगा।

चतुर्थ अध्यायः—प्रताप सिंह बारहठ का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदानः— प्रताप सिंह बारहठ के जन्म परिचय उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके अर्जुनलाल सेठी से मुलाकात, मास्टर अमीचंद से प्राप्त क्रांतिकारी शिक्षा, रासबिहारी

बॉस द्वारा क्रांतिकारी संगठन की स्थापना के कार्य के बारे में अध्ययन करूंगा। प्रताप सिंह के क्रांतिकारी कार्य और हार्डिंग बम कांड, उनकी धोखे से गिरफ्तारी और बरेली जेल में की गई अमानवीय अत्याचार और मृत्यु का विस्तृत अध्ययन करूंगा।

पंचम अध्यायः—बारहठ परिवार के समकालीन स्वतंत्रता सेनानियों के साथ संबंध व गतिविधियाँः— इस अध्याय में बारहठ परिवार के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान देने के लिए जिन—जिन ने सहयोग किया उनके बारे में विस्तार पूर्वक अध्ययन करूंगा सशस्त्र क्रांति के जनक रासबिहारी बोस, श्याम जी कृष्ण वर्मा, मास्टर अमीचंद, सचिंद्र नाथ सान्याल, अवध बिहारी, छोटेलाल, राजस्थान में सशस्त्र क्रांति के सहयोगी गोपाल सिंह खरवा, अर्जुन लाल सेठी, विजय सिंह पथिक आदि के बारे में विस्तार पूर्वक अध्ययन करूंगा।

षष्टम अध्यायः—बारहठ परिवार के पारिवारिक सदस्यः— इस अध्याय में हम बारहठ परिवार के वंश परंपरा से लेकर पिता कृष्ण सिंह माता बख्तावर कंवर पत्नी माणिक कंवर उनकी पुत्री चंद्रमणि जामाता ईश्वरदान आशिया, कृष्ण सिंह के मामा श्यामलदास आदि के बारे में और उनके स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान के बारे में विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

सप्तम अध्यायः—(उपसंहार)ः— उपरोक्त सभी अध्यायों का अध्ययन करके भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शाहपुरा के बारहठ परिवार के योगदान का एक ऐतिहासिक अध्ययन करने का प्रयास किया जायेगा और बारहठ परिवार के किए गए कार्यों का स्वतंत्रता आंदोलन में क्या प्रभाव पडा और बारहठ परिवार द्वारा किए गए कार्यों का अंग्रेजों और ब्रिटिश सरकार पर क्या प्रभाव पडा, ब्रिटिश सरकार ने उनको रोकने के लिए क्या प्रयास किये, उनके बारे में विस्तृत अध्ययन करने का कार्य किया जायेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *सुन्दरलाल–भारत में अंग्रेजी राज खंड 2 दिल्ली 1960*
2. *शंकर सहाय सक्सेना–राजस्थान के क्रांतिकारी परिवार 1969*
3. *विपिन चन्द्र–आधुनिक भारत दिल्ली,1971*
4. *के एस सक्सेना–राजस्थान में राजनैतिक जनजागरण, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर 1972*
5. *ओम सारस्वत–स्वतंत्रता संग्राम और राजस्थान, 1973*
6. *ए आर देसाई–भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्टभूमि दिल्ली,1977*
7. *अयोध्या सिंह–भारत का मुक्ति संग्राम खंड 2 दिल्ली 1977*
8. *मनोहर कोठारी–भारत के स्वंतत्रता संग्राम में राजस्थान,दिल्ली 1978*
9. *2002 जगन्नाथ प्रसाद मिश्र–आधुनिक भारत का इतिहास,लखनऊ 1979*
10. *रघुवीर सिंह–राजस्थान के प्रमुख इतिहासकार और उनका व्यक्तिगत, विश्व भारती बीकानेर 1979*
11. *ताराचंद–भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास खंड 1–4 दिल्ली, 1981–1984*
12. *कीर्ति वर्मा–राजस्थान के क्रन्तिकारी,आलेख पब्लिशर्स,जयपुर 1983*
13. *ओमानंद सरस्वती एवं वेदव्रत शास्त्री–देश भक्तो के बलिदान (हरियाणा साहित्य संस्थान) द्वितीय संस्करण 1984*
14. *देवीलाल पालीवाल, ब्रजमोहन जावलिया–क्रांतिकारी बारहठ केसरी सिंह व्यक्तितव और कृतित्य, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर प्रथम संस्करण 1986*
15. *देवीलाल पालीवाल–क्रांतिकारी बारहठ केसरी सिंह(राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर 1986)*
16. *नाथूराम खडगावत–राजस्थान रोल इन फ्रीडम स्ट्रगल ऑफ 1857(1986)*
17. *एस एन सेन–मॉडर्न इंडिया, न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स, कलकता 1991*
18. *एस सी राय चौधरी–हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडिया,सुरजीत पब्लिकेशन,दिल्ली, संस्करण 1991*
19. *डॉ एम एस जैन–आधुनिक राजस्थान का इतिहास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर 1991*
20. *देव कोठारी और ललित पाण्डेय–स्वतंत्रता आंदोलन में मेवाड़ का योगदान, साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर 1991*
21. *बृजकिशोर शर्मा–पीजेंट मूवमेंट इन राजस्थान, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर 1992*
22. *गोपीनाथ शर्मा–आधुनिक राजस्थान का इतिहास, ग्रंथ भारती, जयपुर 1994*

23. जहूर खान मेहर–राजस्थान के इतिहास का सर्वेक्षण, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर 1994
24. आर एल शुक्ल–आधुनिक भारत का इतिहास,दिल्ली 1994
25. ए.पानगडिया–राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम (इक्कीसवा संस्करण) राजस्थान हिंदी ग्रंथ आकादमी,जयपुर 1998
26. विपिन चन्द्र–भारत का स्वतंत्रता संघर्ष हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली 1998
27. डॉ हरिनारामा सैनी–आजादी का आंदोलन, भारत का प्रकाशन, अलवर 1998
28. प्रकाश नारायण नाटाणी–राजस्थान में स्वाधीनता आंदोलन, ग्रन्थ विकास, जयपुर 1998
29. विनीता परिहार–राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलन(चतुर्थ संस्करण) राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर 1999
30. बी एल ग्रोवर एव यशपाल–आधुनिक भारत का इतिहास,नई दिल्ली 2000
31. बी एल पानगडिया–राजस्थान का इतिहास,राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर,2001
32. सुमित सरकार–आधुनिक भारत 1885–1947 राजकमल प्रकाशन–नई दिल्ली 2002
33. रूद्रांशु मुर्खजी–अवध इन रिवोल्ट 1857–1858 दिल्ली–ओरियंटल ब्लैकस्वान 2002
34. रामप्रसाद व्यास–राजस्थान का वृहत इतिहास खंड द्वितीय(छठा संस्करण) राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर 2003
35. फतेह सिंह मानव–केसरी सिंह बारहठ, साहित्य अकादमी नई दिल्ली 2003
36. अंजू सुथार–बीसवी सदी में राष्ट्रीय राजनीति के निर्माता (रितु पब्लिकेशन) जयपुर 2008
37. डॉ नर्सिंह राजपुरोहित–भारतीय स्वंतन्त्रता संग्राम में राजस्थानी कवियों रों योगदान राजस्थानी साहित्य संस्थान, जोधपुर, 2013
38. हरी शंकर शर्मा व सरोज पावा–राजस्थान का इतिहास, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, इक्कीसवां संस्करण 2015–2016
39. सुरजन सिंह शेखावत–स्वतंत्रता का समर योद्धा राव गोपाल सिंह खरवा 2016
40. सी एन टूणडक–राजस्थान में राष्ट्रीय आंदोलन, नन्दलाल प्रकाशन जयपुर 2018
41. मोहन लाल गुप्ता–क्रांतिकारी बारहठ केसरी सिंह, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर 2020
42. हुकुम चन्द जैन एवं के जी शर्मा राजस्थान का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (बाईसवा संस्करण) राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर 2022
43. सुमनेश जोशी–राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी
44. डॉ ओझा–उदयपुर राज्य का इतिहास
45. सवाई सिंह धमोरा–पूण्य स्मरण–राजस्थान केसरी ठाकुर केसरी सिंह बारहठ
46. श्यामलदास–वीर विनोद खण्ड 1–4 रामनारायण चौधरी–बीसवीं सदी का राजस्थान
47. चिंतामणी शुक्ल एव अवधेश कुमार–आधुनिक राजस्थान का क्रांतिकारी इतिहास

48. कवि निरंजन–हाड़ोती का स्वतंत्रता संग्राम
49. बारहठ कृष्ण सिंह–बारहठ कृष्ण सिंह का जीवन चरित्र और राजपुताना का अपूर्व इतिहास, भाग प्रथम(अप्रकाशित)
50. प्रो.शंकर सहाय सक्सेना–राजस्थान का क्रांतिकारी बारहठ परिवार
51. श्रीमती राजलक्ष्मी देवी(साधना)–क्रांतिकारी जोरावर सिंह बारहठ
52. शिवदान गढ़वी–केसरी सिंह चारण बारहठ
53. डॉ विष्णु पंकज–स्वाधीनता सेनानी अर्जुन लाल सेठी
54. ओंकार सिंह लखावत–स्वातंर्त्य राजसूय यज्ञ में बारहठ परिवार की महान आहुति
55. डॉ गजादान चारण शक्तिसुत–क्रांतिकारी बारहठ परिवार गौरव ग्रंथ
56. सोहन दान चारण–राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा केसरी सिंह बारहठ, जोरावर सिंह बारहठ, प्रताप सिंह बारहठ(राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर)
57. देवीलाल पालीवाल–क्रांतिकारी बारहठ केसरी सिंह(राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर)